छोटी-सी बात

चम्पापुरी के राजा रिपुमर्दन और रानी रतिसुन्दरी की इकलौती लाड़ली पुत्री थी सुरसुन्दरी। वह बड़ी सुन्दर और बुद्धिमान थी। उसे कौड़ियों से खेलने का बहुत शौक था। एक दिन वह बैठी कौड़ियाँ खेल रही थी। उसे देखकर रानी ने कहा–

सुरसुन्दरी कलाचार्य ज्ञानसेन के गुरुकुल में पढ़ने जाने लगी। इसी गुरुकुल में नगर-सेठ का पुत्र अमर कुमार भी पढ़ता था। अमर इस गुरुकुल का सर्वश्रेष्ठ छात्र था। दिखने में सुन्दर, हँसमुख, पढ़ने में तेज बुद्धि वाला। सभी छात्र अमर को अपना नेता मानते थे।

एक दिन गुरुकुल में भोजन-अवकाश हुआ। छात्र भोजन करके खेल रहे थे। राजकुमारी एक वृक्ष की छाया में सोई थी। उसे देखकर छात्र हँसने लगे–

देखो, यह राजकुमारी तो ऐसे खर्राटे भर रही है जैसे रात भर जागरण किया हो।

अरे अमर, इसकी ओढ़नी के पल्लू में यह क्या बँधा है? देखो ज़रा ....

अमर ने पल्लू की गाँठ खोली तो उसमें सात कौड़ियाँ निकलीं। अमर हँसा–

वाह ! राजा की बेटी और पल्ले बँधी कौड़ियाँ ....

अमर ने कहा–

मैं तुम्हें आज एक तमाशा दिखाता हूँ। जाओ इन कौड़ियों की मिठाई ले आओ।

दो छात्र जल्दी से मिठाई खरीदकर ले आये।

अमर ने सभी को प्रसाद बाँटा। तब तक राजकुमारी भी जग गई। अमर ने उसे भी प्रसाद दिया–

लो, मीठा मुँह करो राजकुमारी।

अमर ने राजकुमारी की हथेली में दो-चार बूँदी रखीं तो वह मुँह बिगाड़कर बोली–

वाह ! इतना-सा प्रसाद ! किस दानी ने बाँटा है यह।

हमारी तो सबसे बड़ी दानी तुम्हीं हो। तुम्हारी तरफ से ही बँटा है ....

सुरसुन्दरी–
झूठे कहीं के ! मैं क्यों बाँटती प्रसाद ! और इतना-सा।
अमर–
हम झूठ नहीं बोलते, जरा अपना पल्लू तो देखो।
सुरसुन्दरी ने पल्लू देखा–
हैं, मेरी सात कौड़ियाँ कहाँ गईं? किसने चुराईं?
हमने झूठ तो नहीं बोला।
हा–हा–हा
मजा आ गया
राजकुमारी तैश में आ गई–
अमर ! यह क्या बदतमीजी है? बड़ा चोर है तू ! मैं सोई थी और तुमने मेरी कौड़ियाँ चुरा लीं। धन्ना सेठ का बेटा होकर चोरी करते शर्म नहीं आई तुझे।